(I) **माँग पक्ष के घटक** (Demand Side)—वस्तुओं और सेवाओं के लिए माँग पर अनेक सहायक घटकों का प्रभाव पड़ता है। संक्षेप में, माँग पक्ष की ओर स्फीति को प्रभावित करने वाले घटक निम्नलिखित हैं :

(1) **बढ़ता हुआ सार्वजनिक व्यय** (Increasing Public Expenditure)—जब युद्ध अथवा सार्वजनिक विकास के लिए तेजी से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि की जाती है तो लोगों के पास क्रय-शक्ति (आय) बढ़ जाती है फलतः वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग भी बढ़ जाती है। **प्रो. कीन्स** के अनुसार, जब पूर्ण रोजगार बिन्दु प्राप्त हो जाता है तो इस प्रकार के व्यय में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती। फलतः उत्पादन की तुलना में माँग में अधिक वृद्धि हो जाती है और कीमत बढ़ने लगती है अर्थात् मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। यही बात तब भी क्रियाशील होती है, जबकि अर्थव्यवस्था में विद्यमान अवरोधों के कारण उत्पादन बढ़ने की गति सीमित हो जाती है और लागतें बढ़ने लगती हैं और लागतों में वृद्धि कीमतों में वृद्धि का कारण बनती है।

(2) **बढ़ता हुआ निजी विनियोग** (Increase in Private Investment)—जब व्यक्तिगत उपक्रमी अच्छी व्यापारिक दशाओं या प्राविधिक नवप्रवर्तनों एवं अन्य किसी कारण से अधिक विनियोग करने लगते हैं और यदि पूर्ण रोजगार बिन्दु की प्राप्ति हो गयी है या अर्थव्यवस्था में कुछ बाधाएँ आ जाती हैं जिनके कारण उत्पादन बढ़ने की गति सीमित हो जाती है तो बढ़ता हुआ निजी विनियोग कीमतों में वृद्धि का कारण बन जाता है। कारण यह है कि जब अधिक विनियोग के कारण उत्पत्ति के साधनों की आय बढ़ती है तो उनके उपभोग व्यय में भी वृद्धि होती है अर्थात् माँग भी बढ़ती है और यदि पूर्ति स्थिर रही तो कीमतों का बढ़ना स्वाभाविक हो जाता है।

(3) **करारोपण में कमी** (Reduction in Taxes)—करारोपण सम्बन्धी कटौती के परिणामस्वरूप लोगों की वास्तविक आय और मौद्रिक आय में वृद्धि हो जाती है जिसके कारण प्रभावपूर्ण माँग में वृद्धि हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि युद्ध के अन्त में करारोपण में कमी कर दी जाय तो ऐसी स्थिति में करों में कमी के कारण जो क्रय-शक्ति मुक्त हो जाती है, लोग उसका प्रयोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के क्रय में करते हैं। फलतः वस्तुओं की कमी अनुभव होने लगती है और कीमतों में शीघ्रता से वृद्धि होने लगती है।

(4) **काला धन** (Black Money)—जब अकुशल प्रशासन के कारण करों की राशि वसूल नहीं हो पाती तो इस प्रकार की छिपायी गयी राशि को काला धन कहते हैं। इस काले धन के कारण वस्तुओं की माँग बढ़ती है जिससे कीमतें बढ़ती हैं।

(5) **सार्वजनिक ऋण में कमी** (Reduction in Public Debt)—जब सरकार द्वारा जनता से उधार लेने के कार्यक्रमों में शिथिलता बरती जाती है अर्थात् जनता से कम ऋण लिये जाते हैं व जनता से प्राप्त ऋणों का भुगतान किया जाता है तो जनता के पास क्रय-शक्ति बढ़ जाती है जिसके कारण वस्तुओं और सेवाओं की माँग में भी वृद्धि होती है और यदि वस्तुओं की पूर्ति स्थिर रही तो कीमतें बढ़ने लगती हैं।

(6) **निर्यात वस्तुओं की माँग में वृद्धि** (Increase in Demand for Export Goods)—निर्यात के लिए जब माँग में वृद्धि होती है तो निर्यात बढ़ता है और यदि इस प्रकार की वस्तुओं की पूर्ति स्थिर रही तो स्वदेशी उपभोग के लिए वस्तुएँ कम उपलब्ध हो पाती हैं। स्पष्टतः यदि वस्तुओं की स्वदेशी माँग पूर्ववत् ही रहती है, परन्तु उनकी पूर्ति कम हो जाती है तो उसका प्रभाव कीमतों पर पड़ता है और कीमतें बढ़ने लगती हैं।

(7) **जनसंख्या में वृद्धि** (Increase in Population)—जब देश की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है तो वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग भी बढ़ जाती है किन्तु उत्पादन में जनसंख्या तथा वस्तुओं की माँग में वृद्धि की तुलना में कम ही वृद्धि होती है। इससे भी स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(8) **केन्द्रीय बैंक द्वारा साख निर्माण** (Credit Creation by Central Bank)—जब देश का केन्द्रीय बैंक सरकार के आदेशानुसार साख निर्माण की नीति अपनाता है अर्थात् बैंक दर में कमी, खुले बाजार की प्रवृत्तियाँ तथा इसी प्रकार देश की बैंकिंग व्यवस्था को अधिक साख निर्माण की सुविधा उपलब्ध की जाती है तो साख निर्माण से लोगों के पास क्रय-शक्ति बढ़ जाती है।

(9) **व्यापारिक बैंकों द्वारा साख निर्माण** (Creation of Credit by Commerical Banks)—जब व्यापारिक बैंक अधिकाधिक साख का निर्माण करते हैं तो वह मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के समान ही है। अतः

Scanned with CamScanner

व्यापारिक बैंकों द्वारा साख निर्माण किये जाने पर मौद्रिक आय में वृद्धि होती है। उपभोक्ता साख इसमें प्रमुख होती है। इनसे मुद्रा-स्फीति उत्पन्न होती है।

(10) **प्रयोज्य आय** (Disposable Income)—प्रयोज्य आय से आशय उस आय से है जोकि उत्पादन के साधनों को वैयक्तिक करों के भुगतान के बाद उपभोग कार्यों के लिए उपलब्ध होती है। प्रयोज्य आय में वृद्धि होने पर अर्थव्यवस्था में निरपेक्ष उपभोग व्यय की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार की उपभोग व्यय में वृद्धि स्फीतिकारी होती है।

(II) **पूर्ति या लागत पक्ष के घटक** (Supply or Cost Side)—कई कारकों के सामूहिक प्रभावों के कारण लागतों में वृद्धि होती है, इनमें से प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं :

(1) **प्राकृतिक कारण** (Natural Causes)—देश में प्राकृतिक विपत्तियों के कारण उत्पादन कम हो जाता है, जैसे—भूचाल, बाढ़, सूखा, महामारी आदि।

(2) **औद्योगिक संकट** (Industrial Crisis)—जब देश में मजदूरों द्वारा हड़ताल या उद्योगपतियों द्वारा तालाबन्दी कर दी जाती है तो उत्पादन कार्य कुछ समय तक अवरुद्ध हो जाने से उत्पादन में कमी आती है। फलतः मौद्रिक आय में वृद्धि न होने या स्थिर रहने पर भी मुद्रा-स्फीति उत्पन्न हो जाती है।

(3) **सरकार की व्यापार नीति** (Trade Policy of Govt.)—जब सरकार विदेशों को अधिक निर्यात कर देती है तो देश में वस्तुओं की कमी हो जाती है और इसका परिणाम मुद्रा-स्फीति होता है।

(4) **सरकार की घातक नीतियाँ** (Determinatal Policy of Govt.)—अगर सरकार उद्योगों पर अत्यधिक नियन्त्रण लगाये अथवा लाइसेन्स नीति के क्रियान्वयन में शिथिलता से नई औद्योगिक इकाइयों की स्थापना में हतोत्साहन या अनावश्यक विलम्ब हो या अत्यधिक करारोपण से पूँजी विनियोग का हतोत्साहन हो तो उत्पादन वृद्धि का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है और यह स्थिति बनी रहने से मूल्य-स्तर में वृद्धि होती है।

(5) **पूर्ति का अभाव** (Lack of Supply)—उपलब्ध श्रम, कच्चा माल, पूँजीगत उपकरण, भूमि आदि का अभाव विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने में बाधक होते हैं। ऐसी स्थिति में मुद्रा-प्रसारिक प्रवृत्ति माँग की वृद्धि के कारण नहीं बल्कि पूर्ति में कमी के कारण उत्पन्न हो जाती है।

(6) **व्यापारियों एवं उपभोक्ताओं द्वारा वस्तुओं का संचय करना** (Hoarding of Goods by Traders and Consumers)—जब कीमतें बढ़ रही होती हैं तो और अधिक कीमत बढ़ने की आशा में व्यापारी बाजार से वस्तुओं का स्टॉक हटा लेते हैं और उपभोक्ता वस्तुओं का संचय करना शुरू कर देते हैं जिसके परिणामस्वरूप पूर्ति कम हो जाती है और कीमतें बढ़ने लगती हैं।

(7) **युद्ध** (War)—युद्ध काल में उपभोग वस्तुओं के उत्पादन में कमी हो जाती है क्योंकि साधनों का प्रयोग युद्ध सामग्री में होने लगता है। इस कारण उपभोग वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो जाती है।

(8) **अन्तर्राष्ट्रीय कारण** (International Causes)—विभिन्न देशों के एक-दूसरे के साथ व्यापारिक सम्बन्ध होते हैं। इनमें से किसी एक देश की कीमतों में वृद्धि होने के कारण इसका सहानुभूतिपूर्ण प्रभाव दूसरे देशों में भी होता है और दूसरे देशों में भी कीमतें बढ़ने लगती हैं।

(9) **उत्पादन लागत में वृद्धि** (Increase in Production Cost)—देश में उद्योगों में श्रम-शक्ति की कमी व श्रमिक संघ के दबाव से अगर मजदूरी में वृद्धि होती है या उत्पादन ह्रास नियम के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि होती है तो लागत विधि (Cost-push Inflation) का जन्म होता है क्योंकि वस्तुएँ लागत से कम पर नहीं बेची जा सकतीं।

(10) **प्रौद्योगिक परिवर्तन** (Technological Changes)—जब देश में तकनीकी एवं प्रौद्योगिक परिवर्तनों का दौर चलता है तो अल्पकाल में उत्पादन कार्य रुकने से पूर्ति कम हो जाती है या मुद्रा-स्फीति की स्थिति बनती है।

मुद्रा-स्फीति के प्रभाव

Scanned with CamScanner